''नागार्जुन का जीवन, व्यक्तित्व एवं साहित्य

*डॉ. दीपिका विजय

जिस मिथिला अचंल के गर्भ में सीता और विद्यापति का जन्म हुआ वही मैथिली और हिन्दी के प्रगतिशील साहित्यकार ''नागार्जुन' का जन्म हुआ इनका पूरा नाम वेद्यनाथ मिश्र है पूर्णिमा के जाज्वल्यमान प्रकाश में सन् 1911 ई, की जून मास की किसी तिथि को इनका जन्म हुआ ''वैद्यनाथ मिश्र का जन्म कब हुआ उन्हें भी ठीक से नही मालूम सन 1911 ई. में ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को यानी जून में किसी तारीख को वे जन्में, ऐसा मान लिया जाता है'' (1)

अतः लिखित आधार नही मिलने और स्वंय कवि को भी अपनी जन्म तिथि ठीक से ज्ञात नहीं है इसलिए इनकी नानी से ज्ञात इस सन और माह को ही मान्यता दी गई है। तथा जन्म स्थान दरभंगा के समीप 'तरौनी' माना जाता है, यधपि सत्य यह है कि ये अपने ननिहाल तरौनी के समीप 'सतलख' में जन्में है।

आलोच्य कवि का जन्म वैद्यधाम पर पिता द्वारा कठिन तपस्या करने के पश्चात् हुआ। अपनी तपस्या और वैद्यधाम का आशीर्वाद मानते हुए पिता ने इनका नाम 'वैद्यनाथ' रखा इनसे पहले इनके सभी भाई बहन काल का ग्रास बन गये थे।

परन्तु नियति को यह कैसे मंजूर होता कि 'नागार्जुन' धरती पर अवतरण ले और शीघ्र उठ जाये। अतः नागार्जुन ने लगभग 63 वर्षो तक अनवरत साहित्य साधना धरते हुए नियति को ही चुनोती नही दी अपितु तात्कालिक शासको साहित्यकारो को भी अपनी कृतियों से कभी उपकृहन तो कभी आन्दोलित करते रहे। अवधूत परम्परा का मर्दन सम्वर्धन साथ – साथ करते हुए बाबा नागार्जुन कविता को क्लासिक रुप से शुरु करके नुक्कड शैली के 'धुरियाँ' तक सकल काव्य विस्तार मे कोई आधी सदी तक अंगद के पैर की भाति जमें रहे''। (2)

मैथिली ब्राह्मण 'नागार्जुन' के पूर्वजों का गौत्र वत्स था और कुल की शाखा पालिबाड समोल थी। इस काल में मिश्रवशं मे अनेक महामहोपाध्याय विहानों का उल्लेख मिलता है जो दर्शन और व्याकरण शास्त्र ही पढाते थे। यह परिवार सयुक्त परिवार का अच्छा उदाहरण था। इनके पूर्वजों में प्रपितामह परसमणि मित्र, पितामह छत्रपति मिश्र और पिता का नाम गोकुल मिश्र था। ये अल्पपठित और ईमानदार लोग थे।

'नागार्जुन' बेपरवाह और यायावार वृत्ति के थे। वे दायित्वबोध सच्चाई, साहस और परदुखकातरता की तो मानों प्रतिलिपि ही थे। मिथिला की मधुर माधुरी में जन्में 'नागार्जुन' की माता का नाम 'उमादेवी' और पिता का नाम 'गोकुल' मिश्र था आलोच्य कवि का जन्म अपने मातृ–ग्राम मे हुआ था। ये अपने माता–पिता की इकलौती सन्तान थे। इनके पिता के किसी अन्य स्त्री से सम्बन्ध थे। इनकी माता सहृदय, कार्यशील, दृढ निश्चय वाली महिला थी जब 'नागार्जुन' चार वर्ष के थे तभी इनकी माता का देहान्त हो गया था माँ पर पिता द्वारा हुए अत्याचार के कारण पिता के प्रति इनके मन मे घृणा के भाव बचपन से ही स्फुटित हो गये थे बाप–बेटे कि अनबन का मूल कारण माँ के प्रति निर्मम व्यवहार था नागार्जुन कहते है ''न लो नाम, अपना क्या बिगड़ेगा। मैं भी तुम्हारी चर्चा किसी के आगे

न करुँगा। मेरी माँ को इतना अधिक परेशान रखा, उस व्यक्ति को खुले दिल से पिता कहने की इच्छा भला कैसे होगी''। (3)

बचपन में ही माता का स्वर्गवास हो जाने से और पिता के अन्य स्त्री से सम्बन्ध होने कारण माता–पिता के ममता और वात्सल्य से वंचित रहे। यही कारण है कि माता के प्रति इनके स्नेह और आदर भाव कविताओं, उपन्यासों कहानियों आदि में वर्णित होते है ये नारियों की पीड़ा, दर्द को समझने वाले कवि है।

'भूमिजा' मे सीता के माध्यम से नारी के त्याग, बलिदान, तपस्या, पति द्वारा निष्कासित होने पर हदय की पीड़ा और दर्द के भावों को मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनकी 'पाषाणी' कविता में पाषाण–प्रतिमा 'अहल्या' के मन की पीडा को भावाभिव्यक्त किया है जिसे पति संदेह के कारण श्राप दे देते है।

एक अन्य खण्डकाव्य 'भस्मांकुर' में बसंत के द्वारा नारी स्वभाव का वर्णन करते है जो शिशु के समान भोली है यह अनेक दुखो का विष पी जाती है और फिर भी मृदुल मुस्कान लिए मुस्काती है नारी के प्रति ऐसे आदर भाव व्यक्त करने वाले 'नागार्जुन' ही है। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा 'तरौनी' गाँव मे सस्कृत पाठशाला में हुई। वे अपने पारिवारिक और वैचारिक परिस्थितियो को व्यक्त करते हुए कहते है कि '' मै उन व्यक्तियों में नही था। जिनका जन्म सभ्रांत सुशिक्षित, संपन्न परिवारो में हुआ हो। मेरी शिक्षा घरेलू ढंग की परम्परावादी ब्राह्मण खानदान की सामान्य स्थिति की थी। पिता (श्री गोकुल मिश्र) अकिंचन थे और पारिवारिक जिम्मेदारियों से कतराने की लत उनमे स्पष्ट नजर आती थी''। (4)

प्रथमा के बाद 'गनोली' के संस्कृत विद्यालय से दो वर्ष तक अध्ययन कर मध्यमा उत्तीर्ण की। यहाँ से 'पनगछिया' जिला सहरसा में दो वर्ष तक अध्ययन कर इसके पश्चात आगे विद्या अध्ययन के लिए काशी चले गए।

काशी में चार वर्ष तक संस्कृत का गहन अध्ययन करके संस्कृत में साहित्य शास्त्र में 'आचार्य' की परीक्षा उत्तीर्ण की कुछ समय बाद ये यहां से कलकत्ता चले गए यहाँ इन्होने 'बांग्ला' भाषा का अध्ययन किया यहाँ 'काव्य–तीर्थ' की उपाधि के लिए अध्ययन करना शुरू किया परन्तु पढाई अधूरी छोड़कर सन् 1934 में सहारनपुर गए वहा प्राकृत का हिन्दी अनुवाद करके सौ रूपये महीना कमाने लगे। परन्तु ये यहाँ भी टिक कर नही रहे।

'नागार्जुन' ने औपचरिक शिक्षा का अंतिम वर्ष कलकता में व्यतीत किया इसी मध्य सन् 1934 मे मात्र अठारह वर्ष की आयु में सम्पन्न परिवार में जन्मी 'अपराजिता' देवी से इनका विवाह हो गया। यह सहृदय और परिश्रमी महिला थी। कवि इन्हे प्यार से अपू कहते थे ''क्या कहती अपू, तुम तो मेरी सहधर्मिणी हो, ठेठ सनातन अर्धागिनी श्रीमती अपराजिता देवी। हमारी जायदाद और घर की मालकिन''। (5)

'नागार्जुन' सन 1934 मे घर से निकल गये इस बीच देश विदेश की यात्रा की इनकी पत्नी की जमीन से जो थोडी आय होती उसी से अपना और परिवार का भरण–पोषण करती थी 'नागार्जुन' ने अपनी कविता में पत्नी का परिवारिक जिम्मेदारी केा कुशलता से वहन करने की बात कहीं है कि–

''शोभाकान्त ने कहा
मेरी अम्मा गाँव रहकर
हमे पाल–पोस रही थी''। (6)

परन्तु सात वर्ष बाद सन 1941 में पुनः गृहस्थ जीवन में लौट आये। 'नागार्जुन' के लौट आने पर इनके ससुराल वालों ने बडी धूम–धाम से इनका स्वागत किया और कहीं यह वापस न चले जाए इसलिए इनके साथ एक सुरक्षा

प्रहरी लगा दिया। इसके पश्चात् भी इन्होने कभी टिककर गृहस्थी का भार नही संभाला। कभी कहीं चले जाते थे तो महिनों तक घर की ओर रुख नही करते परिवार का दायित्व इनकी पत्नी और बडे पुत्र शोभाकांत ही संभालते थे। तथापि 'नागार्जुन' स्वंय भी इसे स्वीकार करते हुए कहते है कि ''सही अर्थो में मै न कभी अच्छा पति हो सका, न अच्छा पिता। स्वंय अपने बचपन में पिता को छोडकर घर से भाग गया था। लगभग पन्द्रह साल उन लोगो की निगाहों से ओझल रहा अब मै स्वंय छः बालक बालिकाओ का पिता हूँ। फूहड इस मामले में कि मै इनके प्रति कर्तव्यों का पालन नही कर पाया''। (7)

यो तो 'नागार्जुन के व्यक्तित्व में ऐसा कुछ नही था जो' उन्हें आमजन से भिन्न करता है तथापि उनका साधारण व्यक्तित्व ही असाधारण व्यक्तित्व का पर्याय है वे दुबले–पतले, मझले कद वाले श्याम वर्ण वाले, खददर का कुर्ता–पजामा पहनने वाले, आखँो पर साधारण फ्रेम का चश्मा बढी हुई बेतरतीब दाढी कंधे पर थैला लटकाए मानो कोई गवई छवि वाला सामान्य व्यक्ति हों। ये निम्न वर्ग के व्यक्तियों की तरह जीवन व्यतीत करते थे। उन्हे फैशन, दिखावा आडम्बर जरा भी पसंद नही था। ये विनोद प्रिय और बुक्काफाड कर हँसते थे साधारण से रहने वाले अप्रितम प्रतिभा के धनी 'नागार्जुन' के व्यक्तित्व को डा. प्रकाशचन्द भट्ट यों व्यक्त करते है कि ''दुबला–पतला शरीर मोरे खदद्र का कुर्ता–पाजामा, मंझोला कद, आँखे पर ऐनक पैरो में चप्पले, चेहरे पर उत्साह और पीडित वर्ग के प्रति व्यथा की मिली जुली प्रतिक्रिया के भाव यही 'नागार्जुन' है''। (8)

हर ग्रामीण में नजर आने वाले साधारण छवि वाले 'नागार्जुन' के सम्पूर्ण स्वरूप को जानने में यह कथन समीचीन जान पड़ता है ''सबसे ज्यादा सहदय, भावुक और विचारशील। उनकी सहदमता के जितने रंग और स्तर है उतने इस वक्त के किसी कवि के पास नहीं । न 'अज्ञेय' के पास न 'मुक्तिबोध' के यहाँ''। (9)

सच कहा जाये तो उनके व्यक्तित्व का प्रभाव भले ही साधारण हो लेकिन उनकी रचना धार्मिता का प्रभाव भी पीढियों पर अनवरत देखा जा सकता है। व्यंजनो के शौकीन सुस्वादु पदार्थो की प्रशंसा करने वाले, दमे के पुराने रोगी झोला लटकाए जिसमें मुडी तुडी सी पर्चियों में लिखी कविताएँ लिए यहाँ से वहाँ यात्रा करते बाबा हर ग्रामीण, शोषित के भीतर स्पष्ट दिखाई देते है। अपने रूप ओर वेश से वे सच्चे भारतीय प्रतीत होते थे। सच तो यह है कि आलोच्य कवि 'नागार्जुन' ने तत्कालीन समाज में व्याप्त विसंगतियों और वैषम्य को अपने काव्य का विषय बनाया है उनके दो खण्डकाव्यों और हिन्दी कविताओं में उनका सम्पूर्ण साहित्यिक व्यक्तित्व विविध भावों से गुम्फित है।

इनके दो खण्ड कार्यो में प्रथम 'भस्मांकुर' है इसमे शिव द्वारा काम – दहन की पौराणिक कथा है यह 854 बरवै छन्द के पदों में रचित यह प्रबन्ध काव्य एक दिन की नही अपितु कई वर्षो की साध है। इसका कथनाक 'कालिदास' के प्रसिद्ध कुमार सम्भव से प्रभावित हैं।

'भस्मांकुर' से तात्पर्य है जो भस्म हो गया है उसका फिर वहीं से अंकुरित होना। पौराणिक कथा पर आधारित खण्डकाय 'भस्मांकुर' आलोच्य कवि की भावानुभूति एंव यथार्थ अनुभूति का श्रेष्ठ परिचायक है,

'नागार्जुन' का दूसरा खण्डकाव्य 'भूमिजा' है। इसमें कवि ने प्रेम, सौन्दर्य और वात्सल्य का वर्णन किया है आलोच्य कृति की रचना छन्द मुक्त केवल गेय शैली में छन्दों, मुहावरों का प्रयोग करते हुए माधुर्य और प्रसाद गुणों की व्यंजना की गई है।

''कहीं–कहीं 16 मात्राओं के मात्रिक छन्द का प्रयोग किया हे इसमें भी रचनाकार ने तुक के मामले में चौपाई के नियम को तोड़कर स्वतन्त्रता से काम लिया है''। (10)

युगधारा कवि 'नागार्जुन' का प्रथम प्रकाशित काव्य संकलन है इसमें 37 कविताएँ है। इसके अतिरिक्त सतरंगे पंखो

वाली, खिचडी विप्लव देखा हमने, तुमने कहा था, हजार–हजार बाहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, ऐसे भी हम क्या। ऐसे भी तुम क्या।, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैने, रत्नगर्भ, भूल जाओ पुराने सपनें, अपने खेत में, इस गुब्बारे की छाया में, आदि इस प्रकार करीब 13 कविता सग्रंह है नागार्जुन की कविताओ का लम्बा चौडा इतिहास है जो हिन्दी साहित्य में अपनी जगह बनाये हुए है।

'नागार्जुन' 5 नवम्बर 1998 को दमें की लम्बी बीमारी के बाद इस संसार से महाप्रयाण कर गये। निष्कर्ष यह है कि आलोच्य कवि 'नागार्जुन' की जीवन यात्रा सन् 1911 से सन 1988 तक की सीमाओं में सीमित है यदि यह कहा जाय कि यही उनकी जीवन यात्रा का विस्तार है और यही उसकी सीमाएँ भी है तो असंगत नही होगा। संक्षेप में 'नागार्जुन' के काव्य के संदर्भ में कहा जा सकता है कि 'गूदडी के लाल' उक्ति को चरितार्थ करते हुए इनका काव्य हिन्दी साहित्य संसार में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

***सहायक आचार्य**
हिन्दी विभाग
कौटिल्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
नया गाँव, कोटा

सन्दर्भ सूची

1. सं. प्रमाकर माचवे, सुरेश सलिल–नागार्जुन पृ.5
2. सं. प्रमाकर माचवे, सुरेश सलिल–नागार्जुन पृ.12
3. सं मोहन राकेश–आइने के सामने, पृ. 19
4. स. मोहन राकेश–आइने के सामने पृ. 14
5. डॉ. शिवकुमार मिश्र–साहित्य और सामाजिक सदर्भ, पृ. 122
6. नागार्जुन–अपने खेत मे, पृ–53
7. साप्ताहिक हिन्दुस्तान 4 फरवरी 1973 पृ. 9
8. डॉ. प्रकाशचन्द भट्ट–नागार्जुनः जीवन और सहित्य पृ. 38
9. विजय बहादुर सिंह – दस्तावेज, अंक –33 सन् 1987 अक्टूबर – जनवरी पृष्ठ –16
10. नागार्जुन–भूमिजा पृ. 12